कामकाजी अभिभावक एवं उनके बच्चे: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. रश्मि मलैया

सहा. प्राध्यापक - गृहविज्ञान

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

वर्तमान समय में परिवार की बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पति पत्नि दोनों का नौकरी करना बहुत आवश्यक हो गया है, ऐसे में अपने बच्चे को पालने की जिम्मेदारी उनके लिए भारी होती है। नौकरी पेशा अभिभावकों को अपने बच्चों की परवरिश करना एक चुनौती पूर्ण कार्य है। साथ ही अपने परिवार से दूर एकल परिवार का निर्माण कर बच्चों का उचित पालन पोषण करना घर एवं बाहर के कार्यो में संतुलन स्थापित करना अत्यंत कठिन कार्य है। वस्तुतः माता पिता के पास समयाभाव या अपनी दोहरी भूमिका न निभा पाने के कारण परिवार नामक संस्था को काफी हद तक विघटन के मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य संरचनात्मक प्रकार्यात्मक मॉडल के आलोक में इस समस्या का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना एवं नव उदारवादी सामाजिक व्यवस्था के कुछ सकारात्मक समाधानों का निर्माण करना।

मुख्य शब्द - कामकाजी, अभिभावक, संयुक्त परिवार

वर्तमान दौर तीव्रता से बदलते नित नयी परिस्थितियों का युग है। उन्हीं परिस्थितियों में हमें अपनी बढ़ती आवश्यकताओं के कारण बाहर निकल कर कार्य करना पड़ रहा हैं। पूर्व की भारतीय सामाजिक - आर्थिक व्यवस्था जिसमें मुख्यतः पुरूष ही आर्थिक क्रियाकलापों का दायित्व निर्वाहन करता था, लेकिन आज परिवर्तन आया हैं। स्त्री और पुरूष दोनों बाहर निकल कर अपनी आर्थिक सुरक्षा सृजित कर रहे है। इन परिस्थितियों में समाज के एक महत्वपूर्ण अवयव पारिवारिक व्यवस्था पर प्रभाव डाला है। इन नवीन सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव सर्वाधिक महत्वपूर्ण रूप से कामकाजी माता-पिता के बच्चों के विकास पर पड़ा है।

अध्ययन का उद्देश्य - इस शोध पत्र का उद्देश्य ऐसे कामकाजी अभिभावक जिनमें माता-पिता दोनों घर से बाहर रहकर कार्य करते हैं, उनके बच्चों के संतुलित, शारीरिक, मानसिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है? साथ ही परिवार की भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के इस क्रम में व्यक्तिगत स्तर पर सागर शहर के 50 परिवारों का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में प्रश्नावली प्रविधि का प्रयोग करते हुए व्यक्तिगत साक्षात्कार किया गया जो इस प्रकार रहा -

तालिका क्रमांक – 1

क्र.	प्रश्न परिवार	एकल परिवार			संयुक्त परिवार		
		हाँ	नहीं	कुल	हाँ	नहीं	कुल
1	बच्चों के पालन में समस्या	20	10	30	05	15	20
2	पालन के लिए सहायक रखा	16	14	30	03	17	20
3	बुजुर्ग माता पिता का सहयोग	8	22	30	20	00	20
4	पति पत्नि का बच्चों की देखभाल में सामंजस्य	26	04	30	10	10	20

इसी तरह 10 ऐसे परिवारों का अध्ययन किया गया जिसमें स्थाई रूप से बीमार बच्चे पाये गये। जिनने एकल एवं संयुक्त परिवारों के आधार पर तुलानात्मक अध्ययन किया गया।

तालिका क्रमांक – 2

क्र.	प्रश्नावली	एकल परिवार	संयुक्त परिवार
1	बच्चों के पालन में समस्या	बहुत ज्यादा	सामान्य
2	सहायक रखा	हाँ	नहीं
3	बुजुर्ग माता पिता का सहयोग	सामान्य	अधिकतम
4	बच्चों की देख भाल के लिए पति-पत्नि का सामंजस्य	अधिकतम	सामान्य

इस प्रकार उपर्युक्त दोनों तालिकाओं में से पहली तालिका को देखा जाये तो जहाँ एकल परिवार में बच्चों के पालन पोषण में ज्यादा समस्या देखी गई। वहीं संयुक्त परिवारों में यह समस्या प्रायः कम रही। साथ ही एकल परिवारों में सामान्यतः अपने बच्चों की देखभाल हेतु सहायक की आवश्यकता हुई, जबकि संयुक्त परिवारों में अन्य परिजनों के सहयोग के कारण ऐसी आवश्यकता अनुभव नहीं की गई। एकल परिवारों में वुजुर्ग माता-पिता का सहयोग भी प्रायः कम रहा, जबकि संयुक्त परिवारों में अन्य परिजनों में सहयोग के कारण ऐसी आवश्यकता अनुभव नहीं की गई। बच्चों के पालन पोषण के लिए पति पत्नि के मध्य सामंजस्य ही एकल परिवारों का मुख्य आधार है। जबकि संयुक्त परिवारों में यह प्रकृति सामान्य रही ।

इसी प्रकार सारणी दो में देखा जाये तो स्थायी रूप से बीमार बच्चों वाले परिवारों में बच्चों का पालन पोषण की समस्या देखी गई किन्तु संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों में यह समस्या ज्यादा बड़ी दिखाई पड़ी। एकल परिवारों में सहायकों को रखा गया जबकि संयुक्त परिवारों में विशेष आवश्यकता होने पर ही रखा गया। इसी तरह बुजुर्ग माता पिता का सहयोग भी एकल परिवारों कि तुलना मे संयुक्त परिवारों मे ज्यादा रहा। बच्चों कि देखभाल के लिए पति-पत्नि के बीच सामंजस्य संयुक्त परिवारों मे ज्यादा महत्वपूर्ण रहा। जवकि एकल परिवारों में देखभाल के लिए किसी एक को नौकरी छोड़नी पड़ी।

उपर्युक्त तत्वों को हम देखें तो कुछ प्रमुख तत्व निकलकर आते हैं। जो इस प्रकार हैं -

1. बच्चों की देखभाल करना संयुक्त परिवारों की अपेक्षा एकल परिवारों में ज्यादा कठिन रहा है।

2. बच्चों की देखभाल के लिए एकल परिवार के कामकाजी अभिभावकों ने सामान्यतः सहायक रखे हैं।
3. बच्चों में दादा-दादी/नाना-नानी का सहयोग संयुक्त परिवारों में ज्यादा मिला।
4. एकल परिवारों में बच्चों की देखभाल में एक महत्वपूर्ण योगदान पति-पत्नि का आपसी सामंजस्य है।
5. एकल परिवारों के बच्चों की अपेक्षा संयुक्त परिवारों के बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर रहा है।

इस तरह पूर्व अध्ययनों एवं इस शोध पत्र के माध्यम से यह पता चलता है। कि समाज में नयी बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में बच्चों की देखभाल एक नवीन चुनौती लेकर खड़ी हुई है। यह नवीन उभरते एकल परिवारों की व्यवस्था जो मुख्यतः वर्तमान दौर की उपोत्पाद भी है, में और गंभीर हुई है। यह समस्या केवल बच्चों के पालन पोषण तक ही सीमित नहीं है यह इन बच्चों के स्वस्थ्य शारीरिक-मानसिक विकास उनके युवा होते व्यक्तित्व के सद्मार्गी होने के साथ परिवार एवं संतुलित समाज के समक्ष भी चुनौती के रूप में देखा जा रहा है। यदि इस समस्या के क्षेत्र में समाज के अंदर एवं बाहर दोनों ओर से हस्तक्षेप किया जाये तो इसकी गंभीरता एवं तीव्रता को कम किया जा सकता है। इस समाज के एक अंग के रूप में परिवार व्यवस्था एवं उसके घटक माता-पिता उनके बच्चे सकारात्मक सहयोग करके एक संतुलित परिवारों वाले कामकाजी अभिभावकों एवं उनके बच्चों की देखभाल, सहानुभूति पूर्वक पालन-पोषण एवं माता-पिता को गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने की दिशायें तथा मनोवैज्ञानिक आत्मविश्वास का माहौल मिल सके।

निष्कर्ष - निष्कर्षतः इस शोध पत्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राप्ति दोहरे कामकाजी अभिभावकों वाले एकल परिवारों के माता-पिता एवं बच्चों की देखभाल एक महत्वपूर्ण चुनौती दिखाई पड़ी तथा उनके समाधान के लिए समाज वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों को एक स्पष्ट बिन्दु प्रदान करता है।

सन्दर्भ -

1. मार्टन, रॉबर्ट के.; सोशल थ्योरी एण्ड सोशल थ्योरी, डॉन मिल्स ओ.एन. टी. आक्सफोर्ड, 2008
2. राथ्डो, स्टेहनी मेडलो; दी सिक रोल कान्थिलिस्अ, सोशियोलॉजी इन फोकस, 2012
3. मनी, विजया; ''वर्क लाइफ वैलेन्स एण्ड वूमेन प्रोफसनल'' ग्लोवल जनरल ऑफ मैनेजमेंट एण्ड विजिनेस, रिसर्च इण्टर डिससेक्सन बाल्यून 13 इस्यू -5, 2013
4. पाण्डा, उत्तम कुमार; रोल कानिलिक्ट स्ट्रेस एण्ड डयूल कैरियर कपल्स एन इम्पीरिकल स्ट्डी, दी जनरल आफ फेमिली बेलाफेयर पृ. 72-88, 2011
5. पाण्डेय, साधना; रिसर्च पेपर, इनोबेसन द रिसर्च कोन्सेप्ट वाल्यू. दो इश्यू 9 अक्टूबर, 2017